



विविध समाचार



उपराष्ट्रपति सी. पी. राधाकृष्णन ने करवार में आईएनएस समर्थक नौसेना को सौंपा

करवार (कर्नाटक) १७/१० (संवाददाता): उपराष्ट्रपति सी. पी. राधाकृष्णन ने शुक्रवार को कहा कि भारत की बढ़ती स्वदेशी पोत निर्माण क्षमता और तकनीकी प्रगति से नौसेना की उभरती समुद्री सुरक्षा चुनौतियों से निपटने की क्षमता मजबूत होगी। उपराष्ट्रपति ने साथ ही कहा कि कृत्रिम मेधा (एआई) और मानवरहित प्रणालियां नौसैनिक युद्ध का स्वरूप बदल रही हैं। वह कर्नाटक के करवार में स्वदेश निर्मित बहुउद्देशीय पोत ‘आईएनएस समर्थक’ को भारतीय नौसेना में शामिल किए जाने के बाद आयोजित समारोह को संबोधित कर रहे थे। तमिलनाडु के कट्टपल्ली स्थित लार्सन एंड टूब्रो (एलएंडटी) के पोत निर्माण केंद्र में निर्मित आईएनएस समर्थक में 75 प्रतिशत से अधिक स्वदेशी सामग्री का इस्तेमाल किया गया है। राधाकृष्णन ने कहा कि यह युद्धपोत अगली पीढ़ी के



हथियारों, सेंसर और उभरती प्रौद्योगिकियों के परीक्षण एवं मूल्यांकन के लिए समर्पित मंच के रूप में काम करेगा। इससे नौसेना को स्वदेशी नवाचारों को अभियानगत क्षमताओं में बदलने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि समुद्री प्रौद्योगिकी तेजी से बदल रही है।

स्वायत्त प्रणालियां, मानवरहित मंच, उन्नत सेंसर, कृत्रिम मेधा और नेटवर्क आधारित अभियान नौसैनिक युद्ध तथा समुद्री सुरक्षा का स्वरूप बदल रहे हैं। उन्होंने कहा,

“परीक्षण और मूल्यांकन के लिए समर्पित एक बहुउद्देशीय मंच नौसेना को तेजी से बदलावों के अनुरूप ढलने और स्वदेशी नवाचारों को अभियानगत क्षमताओं में बदलने में मदद करेगा।” अधिकारियों ने बताया कि ‘आईएनएस समर्थक’ समुद्री निगरानी, समुद्र में गश्त, मानवरहित प्रणालियों से जुड़े अभियानों तथा मानवीय सहायता एवं आपदा राहत कार्यों में मदद करेगा। इसके अलावा, यह नौसेना की अन्य उभरती जरूरतों को भी पूरा करेगा।

उपराष्ट्रपति ने कहा कि इस पोत को नौसेना में शामिल किया जाना भारत की औद्योगिक, तकनीकी और पोत निर्माण क्षमताओं में बढ़ते विश्वास को दर्शाता है। उन्होंने नौसेना प्रमुख एडमिरल कृष्णा स्वामीनाथन तथा नौसेना के अधिकारियों और नाविकों की अभियानगत तैयारियों को बनाए रखने के लिए सराहना की।

उन्होंने देश की समुद्री सीमाओं की रक्षा करते हुए सर्वोच्च बलिदान देने वाले कर्मियों को श्रद्धांजलि भी दी। हिंद महासागर क्षेत्र के रणनीतिक महत्व को रेखांकित करते हुए राधाकृष्णन ने कहा कि भारत के व्यापार और ऊर्जा आपूर्ति का एक बड़ा हिस्सा समुद्री मार्गों से होकर गुजरता है।

ऐसे में समुद्री सुरक्षा देश की आर्थिक वृद्धि, सुरक्षा और समृद्धि के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। भारत की समुद्री विरासत का उल्लेख करते हुए उन्होंने मराठा

शासक छत्रपति शिवाजी महाराज की नौसैनिक शक्ति का जिक्र किया और कहा कि उन्होंने 1650 के दशक में यूरोपीय शक्तियों से कोंकण तट की रक्षा के लिए नौसेना का बेड़ा तैयार किया था। उन्होंने चोल वंश की नौसैनिक उपलब्धियों का भी उल्लेख किया, जिसका समुद्री प्रभाव बंगाल की खाड़ी से लेकर दक्षिण-पूर्व एशिया तक फैला हुआ था। राधाकृष्णन ने पाकिस्तान के साथ 1965 और 1971 के युद्धों के दौरान भारत के नौसैनिक अनुभवों को याद करते हुए कहा कि नौसेना ने अपनी क्षमताओं को मजबूत करने की दिशा में लंबा सफर तय किया है।

उन्होंने कहा कि गहरे प्राकृतिक बंदरगाह और अरब सागर के निकट रणनीतिक स्थिति के कारण करवार का भारत की समुद्री सुरक्षा व्यवस्था में विशेष महत्व है।

उद्धव ठाकरे को बड़ा झटका, शिव सेना यूबीटी छोड़ शिंदे कैंप में आए आनंद दूबे

मुंबई १७/१० (संवाददाता): उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना से इस्तीफा देने वाले आनंद दुबे, शुक्रवार को ठाणे में उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की मौजूदगी में एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना में शामिल हो गए। उद्धव ठाकरे गुट के लिए एक बड़े राजनीतिक झटके के रूप में, आनंद दुबे ने इस हज्ते की शुरुआत में पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दिया। कई सालों तक, वे पार्टी के एक मुखर रक्षक रहे, जिन्होंने स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मीडिया में पार्टी की नीतियों का बचाव किया। लेकिन अब यह बचाव खत्म हो गया है। भारी मन और दृढ़ स्वर में, उन्होंने तुरंत पार्टी छोड़ने की घोषणा की—मैं अपनी पार्टी, शिवसेना (यूबीटी) से इस्तीफा दे रहा हूँ। मैं अपनी प्राथमिक सदस्यता और राष्ट्रीय प्रवक्ता के पद, दोनों से पूरी तरह से अलग हो रहा हूँ। उनका इस्तीफा पार्टी के कामकाज को लेकर चल



रही नाराजगी के बीच आया है। उनके पार्टी छोड़ने से शिवसेना (यूबीटी) को बड़ा झटका लग सकता है, खासकर महाराष्ट्र में हिंदी भाषी मतदाताओं तक पहुंचने के मामले में। यह घटनाक्रम ऐसे समय में हुआ है जब महा विकास अघाड़ी (रूड्डी) – जिसमें शिवसेना (यूबीटी), कांग्रेस और नेशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) शामिल हैं – अपने घटकों के बीच एकता पर जोर दे रही है। अपने इस फैसले की गंभीरता को समझते हुए, दुबे ने बताया कि

यह कोई अचानक लिया गया निर्णय नहीं था, बल्कि लंबे समय से चल रहे आंतरिक संघर्ष का नतीजा था। कई सालों तक, उन्होंने बदलते राजनीतिक समीकरणों का बोझ चुपचाप ढोया था। पिछले चार-पांच सालों से, मैंने महाराष्ट्र से जुड़े मुद्दों से लेकर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मामलों तक, हर विषय पर पार्टी का पक्ष मजबूती से रखा है। तो फिर, ज़्याा बदल गया? कुछ भी रातों-रात नहीं होता। कई महीनों से, मैं चुपचाप तकलीफ सह रहा था और बहुत ज्यादा परेशान थाहा।

बांग्लादेश जैसी साजिश रच रहा विपक्ष, फडणवीस बोले-देश में अस्थिरता का षड़यंत्र

मुंबई १७/१० (संवाददाता): महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने शुक्रवार को विपक्ष पर विरोध-प्रदर्शनों की आड़ में सच्चा परिवर्तन की कोशिश करने और अराजकता फैलाने का आरोप लगाया। उन्होंने चुनाव आयोग के खिलाफ कांग्रेस और उसके सहयोगियों के प्रदर्शनों को लेकर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह द्वारा जताई गई चिंताओं को ही दोहराया।



हासिल करने का है... और इसके लिए छात्रों और किसानों को भड़काना, जाति और भाषा के नाम पर नफरत फैलाना, या देश के प्रतिष्ठित संस्थानों की छवि खराब करना ज्यों न किया

जाए किसी आंदोलन की आड़ में अराजकता फैलाना ही उनका असली मकसद है।

उनकी यह टिप्पणी तब आई जब रक्षा मंत्री ने कांग्रेस और उसके सहयोगियों पर

आरोप लगाया कि वे चुनाव आयोग के खिलाफ युवाओं के विरोध-प्रदर्शनों का इस्तेमाल राजनीतिक अस्थिरता पैदा करने के लिए कर रहे हैं। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि वे बांग्लादेश की तर्ज पर भारत में सच्चा परिवर्तन चाहते हैं।

उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि विपक्ष युवाओं को अराजकता की राजनीति का मोहरा बनाकर देश को अस्थिर करने की कोशिश कर रहा है। लखनऊ में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान सिंह ने कहा कि पिछले कुछ दिनों में दिल्ली में जो कुछ हुआ है, वह कई गंभीर सवाल खड़े करता है।

ऐसा लगता है कि कांग्रेस और उसके राजनीतिक सहयोगी—चाहे सीधे तौर पर—सच्चा परिवर्तन चाहते हैं और खुलेआम स्वीकार करते हैं कि उन्हें बांग्लादेश के हालात से प्रेरणा मिली है; वहीं कुछ अन्य लोग बेशर्मा से सरकार को गिराने की मांग कर रहे हैं। इससे यह साफ हो जाता है कि उनका एकमात्र एजेंडा लोकतांत्रिक संस्थाओं को नष्ट करना और देश में आग लगाना है... उनकी लड़ाई न तो चुनावी सुधारों के लिए है, न ही इसका संबंध एसआईआर (स्क्रूक) या ज्ञानेश कुमार से है; और न ही यह देश के युवाओं के उज्ज्वल भविष्य के लिए है—बल्कि, यह देश में अराजकता फैलाकर सच्चा हथियाने की एक साजिश है।

हों या अपने जुड़े हुए संगठनों के माध्यम से—युवाओं की ऊर्जा को रचनात्मक कार्यों और राष्ट्र-निर्माण में लगाने के बजाय, उसका इस्तेमाल राजनीतिक टकराव और अराजकता फैलाने के लिए कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि देश के युवाओं को अराजकता की राजनीति में मोहरे की तरह इस्तेमाल करने की कोशिशें हो रही हैं।

कुछ लोग—बांग्लादेश की घटनाओं की तर्ज पर—सच्चा परिवर्तन चाहते हैं और खुलेआम स्वीकार करते हैं कि उन्हें बांग्लादेश के हालात से प्रेरणा मिली है; वहीं कुछ अन्य लोग बेशर्मा से सरकार को गिराने की मांग कर रहे हैं। इससे यह साफ हो जाता है कि उनका एकमात्र एजेंडा लोकतांत्रिक संस्थाओं को नष्ट करना और देश में आग लगाना है... उनकी लड़ाई न तो चुनावी सुधारों के लिए है, न ही इसका संबंध एसआईआर (स्क्रूक) या ज्ञानेश कुमार से है; और न ही यह देश के युवाओं के उज्ज्वल भविष्य के लिए है—बल्कि, यह देश में अराजकता फैलाकर सच्चा हथियाने की एक साजिश है।

नयी दिल्ली १७/१० (संवाददाता): वरिष्ठ भाजपा नेता धर्मेन्द्र प्रधान ने विपक्ष की आलोचना करते हुए कहा कि उनके आंदोलन का असली चेहरा सामने आ गया है। सच्चा परिवर्तन को लेकर विपक्ष की टिप्पणियों पर प्रतिक्रिया देते हुए, प्रधान ने कहा कि सच्चा बदलना ही विपक्ष का असली मकसद है। उन्होंने आरोप लगाया कि वे बांग्लादेश की घटनाओं से प्रेरित हैं। इसे एक सोची-समझी साजिश करार देते हुए, उन्होंने जोर देकर कहा कि भारत में बदलाव केवल लोकतंत्र के जरिए ही आ सकता है। साथ ही, उन्होंने राहुल गांधी को संविधान-विरोधी बताया और कहा कि मतदाताओं ने समय-समय पर कांग्रेस नेता को नकार दिया है।

भाजपा नेता ने एक्स पर लिखा कि देशहित, व्यवस्था को ठीक करने के दावे और छात्रों के हितों के नाम पर शुरू हुए विरोध प्रदर्शन का असली चरित्र अब किसी से छिपा नहीं है। खुले तौर पर Regime Change और बांग्लादेश से प्रेरणा लेने की बात करना स्पष्ट करता है कि यह छात्रों की आड़



में केवल देश में अराजकता फैलाने और राजनीतिक व्यवस्था को अस्थिर करने की सोची-समझी साजिश है। मगर, विदेशी ताकतों के दम पर सच्चा का सपना देखने वाले ये देश विरोधी लोग समझ लें कि भारत में सच्चा परिवर्तन केवल लोकतांत्रिक प्रक्रिया से तय होता है। इसलिए, भारत की जनता इस अलोकतांत्रिक सोच को कभी स्वीकार नहीं करेगी।

उन्होंने कहा कि हार का शतक लगा चुके नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी बार-बार जनता के जनादेश को अपमानित करते हैं। चुनावी प्रक्रिया से मनचाहा परिणाम न मिलने पर लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति अविश्वास पैदा करने की कांग्रेस

की कोशिश और राजनीतिक स्वार्थ के लिए आए दिन जनता को परेशान करना इनका हमेशा से उद्देश्य रहा है। यह उसी लोकतंत्र विरोधी कांग्रेसी मानसिकता को दिखाता है जिसमें देशवासियों के अधिकारों को कुचल दिया गया था। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि हाथ में संविधान लेकर घूमने वाले संविधान विरोधी राहुल गांधी को जनता बार-बार नकार चुकी है। फिर भी सच्चा की लालसा में अपनी जिद में जनादेश का अपमान और संवैधानिक संस्थाओं पर सवाल उठाकर लोकतंत्र की मर्यादाओं को तार-तार किया जा रहा है। राहुल गांधी जी, लोकतंत्र के प्रति आपका यह नफरती रवैया बेहद शर्मनाक है!

लोकतंत्र दबाने वालों को बख्शा नहीं जाएगा, राहुल गांधी ने युवाओं से गैर कानूनी हिरासत का रिकॉर्ड रखने को कहा

नयी दिल्ली १७/१० (संवाददाता): केंद्र सरकार के खिलाफ अपना हमला तेज़ करते हुए, विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने बुधवार को कड़ी चेतावनी दी। उन्होंने कहा कि जो लोग लोकतंत्र की आवाज़ को दबाने की कोशिश कर रहे हैं, उन्हें जल्द ही न्याय की सख्त मार का सामना करना पड़ेगा। ५५% पर एक पोस्ट में, कांग्रेस नेता ने साफ तौर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार का नाम लिया। उन्होंने कहा कि शीर्ष नेतृत्व से लेकर आम कार्यकर्ताओं तक, किसी को भी बख्शा नहीं जाएगा। गांधी ने लिखा कि वह दिन आ रहा है जब हमारे लोकतंत्र की आवाज़ को दबाने की कोशिश करने वालों को न्याय की सख्त मार का सामना करना पड़ेगा।



की बर्बरता या गैर-कानूनी हिरासत का सामना किया है, कि वे इन घटनाओं का पूरा रिकॉर्ड रखें।

उन्होंने आगे कहा कि मैं चाहता हूँ कि हर छात्र और युवा, जिसने पुलिस की बर्बरता या गैर-कानूनी हिरासत का सामना किया है, वह इसका पूरा रिकॉर्ड—वीडियो या फोटो—रखे; ये बहुत ज़रूरी होंगे।

मौलिक अधिकारों पर अपनी पार्टी के रख को दोहराते हुए, गांधी ने जोर देकर कहा कि शांतिपूर्ण विरोध करना एक संवैधानिक अधिकार है। उन्होंने कहा कि शांतिपूर्ण विरोध आपका अधिकार है। हम किसी

को भी इसे छीनने नहीं देंगे। राहुल गांधी का यह बयान ऐसे समय में आया है जब कई मुद्दों को लेकर देश भर में विरोध-प्रदर्शन हो रहे हैं और राजनीतिक तनाव बढ़ा हुआ है। कांग्रेस पार्टी अक्सर सच्चाधारी सरकार पर असहमति को दबाने और सरकारी मशीनरी का गलत इस्तेमाल करने का आरोप लगाती रही है। इससे पहले दिन में, लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने चेतावनी दी कि मुख्य चुनाव आयुक्त (एचएच) ज्ञानेश कुमार को हटाने की मांग को लेकर हो रहे प्रदर्शनों के दौरान प्रदर्शनकारियों के साथ कथित

मारपीट के लिए जिम्मेदार लोगों को अंजाम भुगतना होगा। हस्तु कार्यकर्ताओं के साथ एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए—जिन्होंने दावा किया था कि विरोध-प्रदर्शन के दौरान दिल्ली पुलिस ने उनकी पिटाई की थी—गांधी ने कहा कि जैसा कि मैंने अपनी प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा था, यह भारत है। अमित शाह जी, इसे अच्छी तरह देख लीजिए। यहाँ न कोई हिंदू है, न मुसलमान, न किसी खास जाति का व्यक्ति; न कोई महिला है, न पुरुष। यहाँ एक आवाज़ है, एक विरोध है।

यह भारत की आवाज़ है, और आप इस आवाज़ के खिलाफ खड़े हैं—प्रधानमंत्री इस आवाज़ के खिलाफ खड़े हैं। मैं आपको सलाह देता हूँ इस आवाज़ के खिलाफ खड़े न हों। कोई भी इस आवाज़ के खिलाफ नहीं खड़ा हो सकता। पुलिसकर्मियों का जिक्र करते हुए, कांग्रेस नेता ने प्रदर्शनकारियों से कहा कि वे कथित घटनाओं के सबूत सुरक्षित रखें और उन्हें पार्टी के साथ साझा करें।

रांची समेत कई जिलों में बारिश, दुर्गा पूजा पंडालों की तैयारी में अड़चन

रांची १७/१० (संवाददाता): झारखंड के रांची समेत कई इलाकों में शुक्रवार शाम हुई बारिश से 17 अक्टूबर से शुरू होने वाले चार दिवसीय दुर्गा पूजा महोत्सव की तैयारियां प्रभावित हुईं। हालांकि, भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के अधिकारियों ने कहा कि बारिश से त्योहार का उत्साह फीका पड़ने का आशंका नहीं है, ज्योंकि शनिवार से मौसम ज्यादातर साफ रहने का अनुमान है। रांची मौसम विज्ञान केंद्र के निदेशक बाबुराज पीपी ने कहा, मुख्य रूप से रांची, खूंटी और गिरिडीह में अचानक हुई बारिश



का कारण ओडिशा और आंध्र प्रदेश के तटीय इलाकों के ऊपर बनी मौसम की प्रणाली थी। शनिवार को पूर्वी और पश्चिमी सिंहभूम जिलों में हल्की बारिश होने का अनुमान है। बाकी जिलों में मौसम साफ रहेगा। रांची में शाम तक रुक-रुककर बारिश होती

रही, जिससे दुर्गा पूजा समितियों को तैयारियों में परेशानी का सामना करना पड़ा। बकरी बाजार स्थित भारतीय युवक संघ के अमित बजाज ने बताया कि मूसलाधार बारिश के कारण पंडाल परिसर के आसपास जलभराव हो गया और सजावट के लिए बनाई गई

कलाकृतियां भी क्षतिग्रस्त हो गईं। उन्होंने कहा, अचानक हुई तेज बारिश से पंडाल परिसर के आसपास जलभराव हो गया, जिससे आगंतुकों को काफी परेशानी हुई। इसके अलावा, पंडाल पर बनाई गई चित्रकारी भी क्षतिग्रस्त हो गई।



अष्टमी तिथि के बारे में खास बातें जानकर ही करें पूजा

शास्त्रीय नवरात्र की महा अष्टमी को माता महागौरी की पूजा होगी। आओ जानते हैं कि ज्योतिष की नजरों में कैसी होती है अष्टमी की तिथि।

- ▶ कलावती नाम की यह तिथि जया सङ्गत है।
- ▶ मंगलवार की अष्टमी सिद्धिदा और बुधवार की मृत्युदा होती है।
- ▶ इस तिथि की की दिशा ईशान है। ईशान में शिव सहित सभी देवताओं का निवास है इसीलिए इस अष्टमी का महत्त्व अधिक है।
- ▶ यह तिथि परम कल्याणकारी, पवित्र, सुख को देने वाली और धर्म की वृद्धि करने वाली है।
- ▶ अष्टमी के दिन नारियल खाना निषेध है, क्योंकि इसके खाने से बुद्धि का नाश होता है। इसके आला तिल का तेल, लाल रंग का साग तथा कासे के पात्र में भोजन करना निषेध है। हालांकि माता को नारियल का भोग लगा सकते हैं। कई जगह कद्दू और लोकी का भी निषेध माना गया है क्योंकि यह माता के लिए लि के रूप में चढ़ता है।
- ▶ यदि अष्टमी को पराण कर रहे हैं तो विविध प्रकार से मङ्गलकारी का पूजन कर भजन, कीर्तन, नृत्यादि उत्सव मनाना चाहिए विविध प्रकार से पूजा-हवन कर 9 कन्याओं को भोजन खिलाया चाहिए और हलुआ आदि प्रसाद वितरित करना चाहिए। माला को अपित करें ये- 1. खीर, 2. मालपुष्प, 3.मीठा हलुआ, 4. पूरणपोखी, 5.केले, 6.नारियल, 7.मिष्ठान, 8. घेवर, 9.ची-शहद और 10.तिल और गुड़।
- ▶ देव, दानव, राक्षस, गंधर्व, नाग, यक्ष, किन्नर, मनुष्य आदि सभी अष्टमी और नवमी को ही पूजते हैं। कथाओं के अनुसार इसी तिथि को मां ने चंड-मुंड राक्षसों का संहार किया था।
- ▶ अष्टमी के दिन कुल देवी की पूजा के साथ ही मां काली, दक्षिण काली, भद्रकाली और महाकाली की भी आराधना की जाती है। माता महागौरी अन्नपूर्णा का रूप है। इस दिन माता अन्नपूर्णा की भी पूजा होती है इसलिए अष्टमी के दिन कन्नडा भोज और ब्राह्मणों को भोजन कराया जाता है।
- ▶ मां भगवती का पूजन अष्टमी को करने से कष्ट, दुःख मिट जाते हैं और शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती। मां की शास्त्रीय पद्धति से पूजा करने वाले सभी रोगों से मुक्त हो जाते हैं और धन-वैभव संपन्न होते हैं।
- ▶ महाष्टमी के दिन महान्नाभ के बंध मां दुर्गा का षोडशोपचार पूजन किया जाता है। महाष्टमी के दिन मां दुर्गा के नौ रूपों की पूजा होती है इसलिए इस दिन भिट्टी के नौ कलश रखे जाते हैं और देवी दुर्गा के नौ रूपों का ध्यान कर उनका आह्वान किया जाता है।



सिद्धिदात्री : मां दुर्गा की नौवीं शक्ति देती है हर तरह की सिद्धि

या देवी सर्वभूतेषु मां सिद्धिदात्री रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ अर्थ : हे मां! सर्वत्र विराजमान और मां सिद्धिदात्री के रूप में प्रसिद्ध अम्बे, आपको मेरा बार-बार प्रणाम है। या मैं आपको बारबार प्रणाम करता हूँ। हे मां, मुझे अपनी कृपा का पात्र बनाओ। मां दुर्गाजी की नौवीं शक्ति का नाम सिद्धिदात्री है। ये सभी प्रकार की सिद्धियों को देने वाली हैं। नवरात्रि-पूजन के नौवें दिन इनकी उपासना की जाती है। इस दिन शास्त्रीय विधि-विधान और पूर्ण निष्ठा के साथ साधना करने वाले साधक को सभी सिद्धियों की प्राप्ति हो जाती है। सुष्टि में कुछ भी उसके लिए अगम्य नहीं रह जाता है। ब्रह्मांड पर पूर्ण विजय प्राप्त करने की सामर्थ्य उसमें आ जाती है। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व- ये आठ सिद्धियाँ होती हैं। ब्रह्मवैवर्तपुराण के श्रीकृष्ण जन्म खंड में यह संख्या अठारह बताई गई है। इनके नाम इस प्रकार हैं - 1. अणिमा 2. लघिमा 3. प्राप्ति 4. प्राकाम्य 5. महिमा 6. ईशित्व, वशित्व 7. सर्वकामावसायिता 8. सर्वज्ञत्व 9. दूरवृत्तता 10. परकायप्रवेशन 11. वाविसिद्धि 12. कल्पवृक्षत्व 13. सुष्टि 14. संहारकरणासामर्थ्य 15. अमरत्व 16. सर्वन्यायकत्व 17. भावना 18. सिद्धि

मां सिद्धिदात्री भक्तों और साधकों को ये सभी सिद्धियाँ प्रदान करने में समर्थ हैं। देवीपुराण के अनुसार भगवान शिव ने इनकी कृपा से ही इन सिद्धियों को प्राप्त किया था। इनकी अनुकम्पा से ही भगवान शिव का आधा शरीर देवी का हुआ था। इसी कारण वे लोक में 'अर्द्धनारीश्वर' नाम से प्रसिद्ध हुए।

मां सिद्धिदात्री चार भुजाओं वाली हैं। इनका वाहन सिंह है। ये कमल पुष्प पर भी आसीन होती हैं। इनकी दाहिनी तरफ के नीचे वाले हाथ में कमलपुष्प है। प्रत्येक मनुष्य का यह कर्तव्य है कि वह मां सिद्धिदात्री की कृपा प्राप्त करने का निरंतर प्रयत्न करें। उनकी आराधना की और अग्रसर हो। इनकी कृपा से अनंत दुःख रूप संसार से निरलिन रहकर सारे सुखों का भोग करता हुआ वह मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। नवदुर्गाओं में मां सिद्धिदात्री अंतिम हैं। अन्य आठ दुर्गाओं की पूजा उपासना शास्त्रीय विधि-विधान के अनुसार करते हुए भवत दुर्गा पूजा के नौवें दिन इनकी उपासना में प्रवृत्त होते हैं। इन सिद्धिदात्री मां की उपासना पूर्ण

कर लेने के बाद भक्तों और साधकों की लौकिक, पारलौकिक सभी प्रकार की कामनाओं की पूर्ति हो जाती है। सिद्धिदात्री मां के कृपापात्र भक्त के भीतर कोई ऐसी कामना शेष बचती ही नहीं है, जिसे वह पूर्ण करना चाहे। वह सभी सांसारिक इच्छाओं, आवश्यकताओं और स्मृताओं से ऊपर उठकर मानसिक रूप से मां भगवती के दिव्य लोकों में विचरण करता हुआ उनके कृपा-रस-पीयूष का निरंतर पान करता हुआ, विषय-भोग-शून्य हो जाता है। मां भगवती का परम सान्निध्य ही उसका सर्वस्व हो जाता है। इस परम पद को पाने के बाद उसे अन्य किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं रह जाती। मां के वरणों का यह सान्निध्य प्राप्त करने के लिए हमें निरंतर नियमनिष्ठ रहकर उनकी

उपासना करनी चाहिए। मां भगवती का स्मरण, ध्यान, पूजन, हमें इस संसार की असारता का बोध कराते हुए वास्तविक परम शांतिदायक अमृत पद की ओर ले जाने वाला है। इनकी आराधना से जातक को अणिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, महिमा, ईशित्व, सर्वकामावसायिता, दूर वृत्तता, परकामा प्रवेश, वाविसिद्धि, अमरत्व भावना सिद्धि आदि समस्त सिद्धियों नव निधियों की प्राप्ति होती है। आज के युग में इतना कठिन तप तो कोई नहीं कर सकता लेकिन अपनी शक्तिनुसार जप, तप, पूजा-अर्चना कर कुछ तो मां की कृपा का पात्र बनता ही है। प्रत्येक सर्वसाधारण के लिए आराधना योग्य यह श्लोक सरल और स्पष्ट है। मां जगदम्बे की भक्ति पाने के लिए इसे कंठस्थ कर नवरात्रि में नवमी के दिन इसका जाप करना चाहिए।

नवरात्रि में दुर्गा विसर्जन का महत्त्व

नवरात्रि में घटस्थापना, जवाटे स्थापना और माता दुर्गा की प्रतिमा की स्थापना करके 9 दिनों तो उनकी पूजा आराधना की जाती है और दशमी के दिन विसर्जन किया जाता है। अंतिम दिन के बाद अर्थात् नवमी के बाद माता की प्रतिमा और जवाटे का विसर्जन किया जाता है। अखिर वया है विसर्जन का महत्त्व।

कहते हैं कि जिस प्रकार बेटियाँ अपनी ससुराल से मायके आती हैं और कुछ समय रहने के बाद पुनः अपने ससुराल चली जाती हैं। उसी प्रकार मां दुर्गा अपने मायके अर्थात् धरती पर आती हैं और 9 दिन रुकने के बाद पुनः अपने पति के पास कैलाशचाम चली जाती हैं। बेटों को विदा करते समय कुछ खाने-पीने का सामान, भूंगा व सामन, वस्त्र आदि दिए जाते हैं, उस प्रकार माता की प्रतिमा के विसर्जन के समय एक पोटली में यह सभी सामान बांधकर उनके साथ ही विसर्जन किया जाता है। एक और मान्यता है कि यह संपूर्ण ब्रह्मांड पंचतत्वों से बना हुआ माना जाता है। शास्त्रों में कहा भी गया है- क्षिति, जल, पाक, गगन, समीरा। पंचतत्व ये अहम शरीरा।। अर्थात् शरीर आकाश, जल, अग्नि और वायु से मिलकर यह शरीर बना है। जल भी पंचतत्व है इसे काफी पवित्र माना गया है क्योंकि यह हर गुण दोष को अपने आप में शिलिन कर लेता है। इसीलिए पूजा में भी पवित्र जल से पवित्रीकरण किया जाता है। जल को ब्रह्म (ब्रह्मा नहीं) भी माना गया है।

जल से ही जीवन की उत्पत्ति हुई है। जल धिर तत्व है। इसी कारण से जल में त्रिदेवों का वास भी माना जाता है। यही वजह है कि पूजा पाठ में भी पवित्रीकरण के लिए जल का प्रयोग किया जाता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, जल में देव प्रतिमाओं को विसर्जित करने के पीछे यह कारण है कि देवी देवताओं की मूर्ति भले ही विलीन हो जाए लेकिन उनके प्राण मूर्ति से निकलकर सीधे परम ब्रह्म में लीन हो जाते हैं। दुर्गा विसर्जन मंत्र : गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थान परमेश्वर। पूजासमयकाले व पुनरागमनाय च॥



एक ही दिन पड़ रही है अष्टमी और नवमी, कन्या पूजन और हवन का सही समय

भारतीय पंचांग और तिथि गणना के अनुसार, 2026 में शारदीय नवरात्रि के दौरान 19 अक्टूबर को अष्टमी और नवमी की तिथि एक ही दिन पड़ रही है। ज्योतिषीय और पंचांगीय गणना के अनुसार, नवरात्रि में ऐसा दुर्लभ योग लगभग 12 से 15 वर्षों में एक बार बनता है। 19 अक्टूबर 2026 को अष्टमी तिथि का मान बहुत कम अवधि का है। प्रातः काल में अष्टमी तिथि समाप्त हो जाएगी और उसी दिन नवमी तिथि का प्रारंभ हो जाएगा। इसलिए शास्त्रों और पंचांग नियम के अनुसार, दोनों तिथियों का पूजन और व्रत एक ही दिन संपन्न किया जाएगा। शारदीय नवरात्रि व्रत व पारण: जो साधक अष्टमी या नवमी का अलग-अलग व्रत रखते हैं, ऐसे में दोनों ही इस दिन व्रत का पारण कर सकते हैं। हालांकि नवमी का व्रत रखने वाले चाहें तो 20 अक्टूबर को पारण करके पूजा-अनुष्ठान, कन्या पूजन और हवन कर सकते हैं। अगला दिन यानी 20 अक्टूबर को विजयदशमी (दशहरा) का पर्व मनाया जाएगा। हालांकि शास्त्रमत अनुसार अष्टमी और नवमी का व्रत रखने वाले दोनों ब्रह्मदुर्गाओं को 19 अक्टूबर को ही सभी अनुष्ठान पूर्ण करना चाहिए। अष्टमी और नवमी तिथि: अष्टमी का प्रारंभ: 18 अक्टूबर 2026 को रात 08:27 बजे अष्टमी का समापन: 19 अक्टूबर 2026 को सुबह 10:51 बजे नवमी तिथि प्रारंभ: 19 अक्टूबर 2026 को प्रातः 10:51 बजे। नवमी तिथि समाप्त: 20 अक्टूबर 2026 को दोपहर 12:50 बजे। अष्टमी की पूजा और पारण: 18 अक्टूबर: जो लोग रात्रिकाल की पूजा करते हैं वे 18 अक्टूबर को निशा पूजा कर सकते हैं। निशा पूजा मुख्य रूप से मध्यरात्रि (निशीथ काल) में की जाती है। ऐसे ब्रह्मदुर्गा 18 अक्टूबर को व्रत रखकर 19 अक्टूबर को व्रत का पारण सुबह 07:55 के बाद और 10:51 के पहले कर सकते हैं। 19 अक्टूबर: जो लोग उदयातिथि को मनाते हैं वे 19 अक्टूबर को संधिकाल में पूजा और हवन करने के बाद कन्या भोज का कर सकते हैं। इसी दिन वे पारण भी कर सकते हैं। चाहे तो सभी कार्य अभिजीत मुहूर्त में संपन्न कर सकते हैं। यह मुहूर्त दिन में 11:43 से 12:29 तक रहेगा। स्थानीय समय अनुसार सभी मुहूर्त में 2 से 5 मिनट की षट-बढ़ रहती है। 19 अक्टूबर 2026 पूजा के शुभ मुहूर्त: अभिजीत मुहूर्त - दिन में 11:43 से 12:29 तक। विजय मुहूर्त - दोपहर में 02:00 से 02:45 तक। शारदीय नवरात्रि व्रत व पारण: गोधुलि मुहूर्त - शाम 05:48 से 06:13 बजे तक। संधि पूजा समय: मुहूर्त - 19 अक्टूबर 2026 को सुबह 10:27 बजे से सुबह 11:15 बजे तक (कुल 48 मिनट) महत्व: जब अष्टमी तिथि अपने समापन की ओर होती है (अंतिम 24 मिनट) और नवमी तिथि का प्रारंभ होने वाला होता है (शुरुआती 24 मिनट), तब इस बीच के 48 मिनट के विशेष अंतराल को 'संधिकाल' की संज्ञा दी गई है। इस समय पूजा करने से अष्टमी और नवमी दोनों की ही पूजा संपन्न हो जाएगी। नवमी पूजा और पारण: 19 अक्टूबर का पूजन: 19 अक्टूबर की सुबह 10:51 बजे नवमी तिथि लगते ही दोपहर का नवमी पूजन, हवन और रात्रि कालीन साधना इसी दिन संपन्न की जाएगी। 20 अक्टूबर का उदयातिथि पूजन: जो ब्रह्मदुर्गा उदयातिथि को प्रमुख मानते हैं, वे 20 अक्टूबर की सुबह नवमी पूजन, कन्या भोज और हवन का अनुष्ठान कर सकते हैं, क्योंकि दोपहर 12:50 बजे तक नवमी तिथि विद्यमान रहेगी। व्रत पारण का समय: नवरात्रि व्रत का पारण 20 अक्टूबर 2026 को नवमी पूजन और कन्या भोज संपन्न करने के पश्चात दोपहर 12:50 बजे से पूर्व कर लेना शास्त्रसम्मत रहेगा।



नौदुर्गा में से किस माता ने किया किस असुर का वध

नवरात्रि में नौ दुर्गा के नौ रूपों (नवदुर्गा) की पूजा की जाती है। पौराणिक कथाओं और 'दुर्गा सप्तशती' (मार्कण्डेय पुराण) के अनुसार, देवी के विभिन्न स्वरूपों ने सृष्टि को राक्षसों के अत्याचार से मुक्त कराने के लिए अनेक महान् असुरों का वध किया था।

माँ शैलपुत्री
वध किए गए असुर: मधु और कैटभ, दुर्गमासुर (प्रारंभिक युद्ध में)
विशेषता: पर्वतराज हिमालय की पुत्री माँ शैलपुत्री ने अपने पूर्व जन्म में सती रूप में और फिर शैलपुत्री रूप में असुरों के विनाश की नींव रखी।

माँ ब्रह्मचारिणी
वध किए गए असुर: तपस्या और नियम के माध्यम से असुर सेना का विनाश
विशेषता: माँ ब्रह्मचारिणी कठोर तप का प्रतीक हैं। इन्होंने अपने तपोवत से राक्षसों के मनोवत और उनकी बुरी शक्तियों को क्षीण किया।

माँ चंद्रघटा
वध किए गए असुर: विशुर जो महिषासुर की चतुरंगिणी सेना का सेनापति था
विशेषता: मस्तक पर बड़े के आकार का आधा चंद्रमा धारण करने वाली माँ चंद्रघटा के भयानक घटों की खनि से ही असुर मूर्छित होकर मरने लगते थे। इन्होंने महिषासुर के कई बड़े सेनापतियों का अंत किया।

माँ कुम्भांडा
वध किए गए असुर: घुमलोचन, दैत्यराज अविष्ठासुर और असुर सेनापति
विशेषता: मद इसी से ब्रह्मांड की रचना करने वाली माँ कुम्भांडा अपनी आठ भुजाओं के अस्त्र-शस्त्रों से ब्रह्मांड में उपद्रव मचाने वाले दैत्यों का संहार करती हैं।

माँ स्कंदमाता
वध किए गए असुर: तारकासुर (कार्तिकेय जी के माध्यम से नेतृत्व)
विशेषता: भगवान स्कंद (कार्तिकेय) की माता होने के कारण इन्हें स्कंदमाता कहा जाता है। इन्होंने दैवताओं की

सेना का नेतृत्व कर तारकासुर के वध में मुख्य भूमिका निभाई।

माँ कात्यायनी
वध किए गए असुर: महिषासुर (मुख्य रूप से)
विशेषता: महर्षि कात्यायन की तपस्या से प्रकट हुई माँ कात्यायनी को 'महिषासुरमर्दिनी' भी कहा जाता है। इन्होंने ही दैवताओं को प्रोत्साहित करने वाले महत्बलशाली महिषासुर का वध किया था।

माँ कालरात्रि
वध किए गए असुर: रक्तबीज, चंड और मुंड का संहार
विशेषता: जो शुभ और निशुभ के सेनापति थे। विशेषता: माँ का यह सबसे भयानक रूप है। जब असुर रक्तबीज के खून की हर बूंद से नष्ट राक्षस पैदा हो रहे थे, तब माँ कालरात्रि ने उसका सारा खून पीकर उसका अंत किया था।

माँ महागौरी
वध किए गए असुर: शुंभ और उसकी सेना का संहार
विशेषता: अत्यंत शांत और गौर वर्ण वाली माँ महागौरी ने दैवताओं की प्रार्थना पर प्रकट होकर अपनी शक्ति से शुंभ-निशुंभ की विशाल सेना का विनाश किया था।

माँ सिद्धिदात्री
वध किए गए असुर: निशुंभ का अंतिम वध
विशेषता: सभी सिद्धियों को देने वाली माँ सिद्धिदात्री ने ही अंत में निशुंभ नामक दैत्य का वध करके दैवताओं को उनका स्वर्ग लोक पुनः लौटाया था।

कलिंग समाचार



संपादकीय

मोबाइल के बाहर भी हैं वाट्सएप विश्वविद्यालय

पिछले करीब दस वर्षों से भारत में वाट्सएप यूनिवर्सिटी के तो खूब चर्चे होते आये हैंए लेकिन बहुत कम लोगों को पता था कि इसके समांतर ही देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के जरिये भी ज्ञानगंगाएं प्रवाहित हो रही है जो युवाओं को उसी तरह से दीक्षित कर रहे हैं जैसे कि वाट्सएप विवि। इसका एक उदाहरण दिल्ली में दिखलाई दिया जब देश की राजधानी से सटे ग्रेटर नोएडा के एक निजी विवि के छात्र.छात्राओं ने कांग्रेस के खिलाफ प्रदर्शन किया। इस विश्वविद्यालय में पल्लवित हो रही प्रतिभाओं के बारे में शायद ही लोगों को पता चल पाता लेकिन एक न्यूज़ चैनल के पत्रकार ने इस प्रदर्शन में शामिल कुछ छात्रों के ज्ञान की जांच कर ली जो विरोध प्रदर्शन करने के लिये बुधवार को कांग्रेस के मु यालय की ओर जा रहे थे। आश्चर्य की यह बात सामने आई कि प्रदर्शन कर रहे जा रहे छात्रों में से कोई भी यह नहीं समझा पाया कि वे प्रदर्शन क्यों कर रहे थे। और तो औरए उनके हाथों में जो त्ति तयां थीं उनका अर्थ बतलाना तो दूरए वे उसे पढ़ तक नहीं पा रहे थे। जब पत्रकार ने युवाओं के हाथों में लगी त्ति तयों पर सवाल करने शुरू किये तो पता चला कि उन्हें पता तक नहीं था कि किन मुद्दों को लेकर वे प्रदर्शन कर रहे हैंए उन्हें केवल यह पता था कि वे कांग्रेस के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं और भाजपा के समर्थन में हैं। छात्र.छात्राओं के हाथों में जो त्ति तयां थीं उनमें लिखा था. श्पहले लेंगे आपका वोट फिर ले लेंगे मंगलसूत्र और नोटश्ए श्मां.बहनों के गहनों पर नज़्र न गड़ाओश्ए २70 सालों में नहीं दी दीया.बत्ती अब छीन लेंगे आधी स पत्तिश्ए श्नो प्लेस फॉर अर्बन नक्सलश् आदि। छात्र.छात्राएं विवादित इन्तेरिक्टिंग टैक्स या भाजपा के कथित विकसित भारत की अवधारणा तथा वास्तविकता के बारे में कुछ भी बतला नहीं पा रहे थे। यहां तक कि कांग्रेस के जिस घोषणापत्र का वे विरोध कर रहे थेए उसे किसी ने पढ़ा तक नहीं था। जाहिर है कि वे उसके बारे में वही सब कुछ कह रहे थे जो उन्हें बताया गया था या जो वाट्सएप विवि के माध्यम से उनके मोबाइलों तक पहुंच रहा है। छात्र जो त्ति तयां हाथों में लिये हुए थेए उन पर लगभग वे ही नारे लिये हुए थे जो भाजपा के होते हैं। इनमें कांग्रेस व इंडिया गठबन्धन की सरकार बनने पर लोगों का सोना और मंगलसूत्र छीन लेने की बात लिखी गयी थी। इस पर जब रिपोर्टर ने प्रश्न किये तो छात्र विषय से पूर्णतरू अनभिज्ञ साबित हुए। साफथा कि उनके हाथों में ये त्ति तयां पकड़ाई गयी थीं। अब यह शोध का विषय हो सकता है कि आखिर उन्हें ये नारे लिखकर किसने दिये और छात्रों से इस प्रकार का प्रदर्शन करवाने का औचित्य क्या था। फ़िरए क्या छात्रों की खुद की समझ इतनी भी नहीं है कि वे किसी के उकसाने पर या कहने पर ऐसा प्रदर्शन करने चले आये। निजी यूनिवर्सिटी में फ़ैसए अधोसंरचना एवं सुविधाओं को देखें तो पता चलता है कि उसमें अच्छे.खासे खाते.पीते लोगों के बच्चे ही पढ़ सकते हैं। अगर ऐसे शिक्षण संस्थान में पढ़ने वालों की राजनैतिक समझ ऐसी हो तो अर्द्ध शिक्षित युवाओं को बहका पाना कितना आसान हैए यह भी इस प्रदर्शन को देखकर समझा जा सकता है। पिछले 10 वर्षों से नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में चल रही केन्द्र सरकार के दौरान युवाओं व छात्रों का जिस प्रकार से ब्रेनवाश हुआ है उसका परिणाम किस तरह की युवा पीढ़ी को पैदा कर सकता है. यह भी इस वीडियो को देखकर समझा जा सकता है। भाजपा व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा आईटी के जरिये जिस अज्ञानता का प्रसार किया गया है उसका यह साक्षात उदाहरण कहा जा सकता है। यह वीडियो अब खूब वायरल हो रहा है। यही युवा विद्यार्थी वर्ग भाजपा.संघ का कोर वोटर है। मोदी की लोकप्रियता का आधार किस प्रकार की घृणा और विवेकहीनता पर टिकी है. यह भी इस वीडियो को देखकर जाना जा सकता है। छात्रों के साथ पत्रकार की हुई बातचीत जहां एक ओर छात्रों के सामान्य ज्ञान पर सवालिया निशान उठाती है वहीं देश की शिक्षा का स्तर क्या है. यह भी उससे जाहिर हुआ है। माना यह भी जा रहा है कि संचालकों की शह पर यह प्रदर्शन जुलूस निकाला गया था जो स भवतरू भारतीय जनता पार्टी को खुश करना चाहते हों। ग्रेटर नोएडा में होने के नाते उत्तर प्रदेश की सरकार को भी खुश करने का इसका मकसद हो सकता है।

अरविन्द मोहन

इस बार यह शोर पहले से मच रहा है। दूसरी ओर भाजपा सरकार ने लालू जी और उनके परिवार पर कानूनी शिकंजा कसना शुरू कर दिया है जो चुनाव पास आने तक नाटकीय रूप ले लेगा। लालू जी इससे निजी रूप से कमजोर पड़ें न पड़ेंए राजनैतिक रूप से कमजोर होंगे। उधर राजद का मतलब अहीर और मुसलमान गठजोड़ से आगे बढ़ ही नहीं रहा है और ऐसा गठजोड़ जैसे ही ताकतवर दिखता है।

आखिरकार निशांत कुमार का बयान भी आ गया कि एनडीए को चाहिए कि नीतीश को कुमार को ही मु यमंत्री बनाए रखने की घोषणा कर दे। निशांत माने नीतीश कुमार के पुत्र। पहली बार सार्वजनिक रूप से ऐसा बयान देकर उन्होंने कई तरह के संकेत दिए। निश्चित रूप से पहला संकेत तो राजनीति में आने का है। बीते बीस साल से मु यमंत्री के संग रहने और अकेली सतान होने के चलते सारा लाड़.प्यार पाने के बावजूद अभी तक उनके किसी आचरण को लेकर किसी तरह की चर्चा नहीं थी। बल्कि वे इतने शांत और सावधान तरीके से रहते थे कि काफ़ी

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नहीं की। शायद उनके पास ऐसा कोई और नाम है भी नहीं। लेकिन बीते साल भर में एनडीए और भाजपा की तरफ से यह कहा जाता रहा है। कमाल यह है कि इसके बावजूद निशांत कुमार को यह बात दोहराने की जरूरत हुई। बीते दो.तीन महीनों में विपक्षी राजद की तरफ से नीतीश कुमार के एक बार फिर से पाला बदलने की बात उछाली जा रही है और लालू प्रसाद यादव ने अब भी नीतीश का स्वागत करने की बात भी चला दी है।

खुद नीतीश कुमार भी इस सवाल पर अपने ही आचरणों से संदेह गहरा रहे हैं। दिल्ली के अपने दो दौरों में उन्होंने भाजपा के किसी नेता से भेंट नहीं की या भाजपा के शीर्ष नेताओं ने उन्हें समय न दिया। वे दिल्ली में भाजपा सरकार के शपथ ग्रहण में भी नहीं ये जबकि एनडीए के बाकी सभी मु यमंत्री ये। उससे भी ज्यादा चर्चा उनकी पार्टी के दो बड़े नेताओं का दिल्ली आकर पूरी तरह भाजपा के रंग में रंगना है और इसे ही राजनैतिक पंडित नीतीश कुमार की घेराबंदी बताते हैं। नीतीश बिहार में भी भाजपा के एक गुट के व्यवहार को लेकर बहुत प्रसन्न नहीं रहते। यह समूह

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

चाहिए जो ज्यादा पंख फैलाकर झुलस चुके हैं। जब वे नीतीश जी के साथ थे तो बिना राजनैतिक पृष्ठभूमि के भी सबसे भरोसेमंद थे।

दूसरी ओर कांग्रेस और राजद के रिश्ते एनडीए के घटकों से भी ज्यादा खराब हैं। हरियाणा का चुनाव हारने के बाद तो अखिलेश और तेजस्वी का रख भी बदला। दिल्ली चुनाव ने दूरी और बढ़ाई और अब तो एक दूसरे के खिलाफ बयानबाजी भी शुरू हों गई है। भाजपा की तरह कांग्रेस में भी कुछ लोग अलग होकर अकेले चुनाव लड़ने की वकालत कर रहे हैं। कांग्रेस का भी आधार या स्वीकृति बढ़ी है लेकिन कोई एक या दो ठोस सामाजिक आधार नहीं है।

मुसलमान समर्थक हैं लेकिन राजद साथ न हो तो उनका वोट मिलने का भरोसा नहीं है। संगठन कमजोर है और अगर कन्हैया कुमार और पप्पू यादव जैसे उत्साही उसके पास हैं तो लालू.तेजस्वी उनको जमीन देने को तैयार नहीं हैं। लालू जी ने पिछले लोकसभा चुनाव में अहीरों को काम टिकटए कोइरी समाज को ज्यादा टिकट और वाम दलों समेत सारे विरोधियों को साथ

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नई राजनीति की जरूरत, पुराने चेहरों का बोझ

सारे राजनैतिक पंडित उनके सामान्य होने पर ही शक करते थे। अब अगर वे बीआईटी मेसरा से इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने के बाद और पचास साल की उम्र में और पार्टी तथा समाज के अनेक पक्षों से बार.बार की जा रही मांग के बाद सक्रिय होने का फैसला करते हैं तो उन्हें शुभकामना दी जा सकती है। अपनी स्वर्गवासी मां के जन्मदिन पर आयोजित किसी कार्यक्रम में उन्होंने यह बात कही और जदयू का प्रदर्शन पहले से बेहतर होने की बात भी कही।

यह संयोग है कि उनका कहना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा अपने बिहार दौरे में नीतीश जी को शलाइला मु यमंत्रीश् बताने के दो दिन बाद ही हुआ। प्रधानमंत्री ने इस दौरे के साथ ही भाजपा और एनडीए के चुनाव अभियान का शंखनाद भी कर दिया। इसमें की लोगों को पांच साल पहले बीच कोरोना में हजारों रंगीन टीवी सेट के माध्यम से बिहार में आनलाइन शंखनाद करने वाला प्रसंग भी याद आया क्योंकि प्रधानमंत्री ने एक साथ बिहार के सारे कोनों को छू लिया था। उन्होंने नीतीश जी को आगे रखकर चुनाव लड़ने की घोषणा

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन

नीतीश कुमार, अरविन्द मोहन



विविध समाचार



चंबा में गहरी खाई में गिरी पर्यटकों की कार झुलसाती गर्मी से मिलेगी बड़ी राहत, मौसम विभाग ने दी मौनसून के आने की पक्की तारीख, भारी बारिश का अलर्ट

चंबा। हिमाचल प्रदेश के दुर्गम चंबा जिले से एक बेहद दर्दनाक मामला सामने आया है। यहां के चुराह उपमंडल में बैरागढ़—साच पास—किलाड़ सड़क पर 29 मई की आधी रात को एक भीषण सड़क हादसा हो गया। सैलानियों को लेकर जा रही एक एर्टिगा कार (एचपी—01सी—2133) अनियंत्रित होकर कई सौ फीट गहरी खाई में जा गिरी। इस खौफनाक हादसे में छत्तीसगढ़ के दो परिवारों के सात सदस्यों समेत कुल आठ लोगों की मौत की आशंका जताई जा रही है। दुर्घटना के बाद से ही सभी लोग लापता हैं और उनके बचने की उम्मीद न के बराबर है। पुलिस से मिली

जानकारी के मुताबिक, परखच्चे उड़ गए और वह छत्तीसगढ़ से हिमाचल घूमने आए ये दो परिवार चंबा के मशहूर पर्यटन स्थल डलहौजी के एक होटल में ठहरे हुए थे। 29 मई को वे सभी साइट सीन के लिए साच पास की ओर निकले थे। नियम के मुताबिक उन्हें उसी शाम होटल वापस लौटना था, लेकिन जब देर रात तक कोई वापस नहीं आया और उनके मोबाइल भी बंद आने लगे, तो होटल प्रबंधन ने घबराकर पुलिस को सूचित किया। इसके बाद पुलिस ने मुस्तैदी दिखाते हुए तलाश शुरू की, शिकार हुए लोगों में तो इस खौफनाक हादसे का पता चला। बचाव दल के मुताबिक, हादसा इतना भयानक था कि गाड़ी के

साथ ही दूसरे परिवार के पी. जी. कार्तिगहेयन, उनकी पत्नी मणिमाला और उनका बेटा नंदन भी इस हादसे का शिकार हुए हैं। इन सात पर्यटकों के अलावा कार का स्थानीय चालक विश्वास भी लापता है, जो चंबा के डलहौजी का ही रहने वाला था। चंबा के पुलिस अधीक्षक विजय सकलानी ने रविवार को मामले की पुष्टि करते हुए बताया कि हादसे की खबर मिलते ही रेस्क्यू टीमों को तुरंत मौके पर रवाना कर दिया गया था। चूंकि दुर्घटनास्थल अत्यंत दुर्गम क्षेत्र में है, इसलिए वहां तक पहुंचना एक बड़ी चुनौती बना हुआ है। एसपी खुद भी हालात का जायजा लेने के

लिए घटनास्थल की ओर रवाना हो चुके हैं। उन्होंने कहा कि पुलिस और खोज दल पूरी ताकत से रेस्क्यू ऑपरेशन में जुटे हैं। गौरतलब है कि चंबा जिले में पर्यटकों के साथ इसी महीने यह दूसरी बड़ी त्रासदी है। इससे पहले बीते 10 मई की रात को भी भटियात उपमंडल के ककीरा—लाहड़ू मार्ग पर बारिश के दौरान एक इनोवा कार गहरी खाई में गिर गई थी। उस हादसे में गुजरात के 6 पर्यटकों की मौके पर ही मौत हो गई थी, जबकि 4 अन्य गंभीर रूप से घायल हुए थे। एक ही महीने के भीतर हुए इन दो बड़े हादसों ने पूरे इलाके को झकझोर कर रख दिया है।

चंडीगढ़। उत्तर भारत के लोगों को भीषण और रिकॉर्डतोड़ गर्मी से बहुत जल्द बड़ी राहत मिलने वाली है। उत्तर प्रदेश, दिल्ली—एनसीआर समेत तमाम राज्यों में अगले कुछ दिनों के लिए भारी बारिश, आंधी—तापमान और ओलावृष्टि का अलर्ट जारी किया गया है। लेकिन इन सब के बीच देश का सबसे बड़ा सवाल यही बना हुआ है कि तपती ६ रती को शांत करने वाला मौनसून आखिर कब दस्तक देगा? मौसम विभाग ने अपने सबसे लेटेस्ट अपडेट में इसका जवाब देते हुए देशवासियों को बड़ी खुशखबरी दी है। आईएमडी के अनुसार, अगले तीन से चार दिनों के भीतर दक्षिण—पश्चिम मौनसून केरल के तट पर पहुंच जाएगा। पहले अनुमान लगाया गया था कि मौनसून 26 मई को ही तय समय से पहले आ जाएगा, लेकिन चक्रवाती परिस्थितियों के कारण इसमें थोड़ी देरी हो गई। अब मौसम विभाग ने स्पष्ट किया है कि अगले तीन—चार दिनों में दक्षिण—पश्चिम मौनसून के दक्षिण—पश्चिम और दक्षिण—पूर्व अरब सागर, लक्षद्वीप समूह, केरल तथा तमिलनाडु के कुछ हिस्सों में आगे बढ़ने के लिए परिस्थितियां पूरी तरह अनुकूल हैं। इसके साथ ही मौनसून पश्चिम—मध्य, पूर्व—मध्य और उत्तर—पूर्व बंगाल की खाड़ी के बचे हुए हिस्सों में भी तेजी से आगे बढ़ेगा। मौनसून के मुख्य भूमि पर पहुंचने से पहले ही उत्तर भारत के लगभग सभी राज्यों में प्री—मौनसून गतिविधियों के कारण इस हफ्ते तेज बारिश और आंधी—तूफान का दौर शुरू हो जाएगा। उत्तर प्रदेश में आज भारी बारिश के साथ कुछ स्थानों पर ओले गिरने की चेतावनी जारी की गई है, जबकि 1 जून को भी राज्यभर में व्यापक बारिश और बिजली गिरने का अनुमान है। वहीं दिल्ली, हरियाणा



और चंडीगढ़ में 1 से 4 जून तक गरज—चमक के साथ भारी बारिश होगी। आज यानी 31 मई को दिल्ली—एनसीआर और हरियाणा में 70 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से विनाशकारी आंधी और बारिश का ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। पंजाब में अगले छह दिनों तक और राजस्थान में अगले सात दिनों तक आंधी—तूफान के साथ व्यापक स्तर पर बारिश होने की संभावना है, जबकि राजस्थान में आज ओलावृष्टि भी हो सकती है। पहाड़ी राज्यों की बात करें तो उत्तराखंड में आज भारी आंधी—बारिश और ओले गिरने की आशंका है, जबकि जम्मू—कश्मीर और हिमाचल प्रदेश में 3 से 6 जून के बीच मौसम बेहद खराब रहेगा। राहत की इस खबर के बीच मौसम विभाग ने खेती—किसानी को लेकर एक चिंताजनक अनुमान भी साझा किया है। आईएमडी के महानिदेशक मृत्युंजय मोहपात्रा ने अपने बयान में कहा कि इस साल पूर्वोत्तर क्षेत्र में तो सामान्य वर्षा होने की संभावना है, लेकिन देश के बाकी हिस्सों में मौनसून की बारिश सामान्य से कम रह सकती है। विशेष रूप से देश के अधिकतर वर्षा आधारित कृषि क्षेत्रों वाले 'मानसून कोर जोन' में दक्षिण—पश्चिम मानसून की मौसमी वर्षा सामान्य से कम यानी एलपीए के 94 प्रतिशत से कम रहने की सबसे अधिक संभावना है।

मुलाजिमों और पेंशनर्स के लिए खुशखबरी, पंजाब सरकार को 30 जून तक देना होगा डीए

चंडीगढ़। पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट ने राज्य सरकार की उस याचिका को खारिज कर दिया है, जिसमें सरकार ने 30 जून तक सभी कर्मचारियों और पेंशनरों को IAS, IPS और न्यायिक अधिकारियों के बराबर व। देने के आदेश पर रोक लगाने की मांग की थी। अदालत के इस फैसले के बाद अब सरकार पर लाखों कर्मचारियों और पेंशनरों को बढ़ा हुआ महंगाई भत्ता जारी करने का दबाव बढ़ गया है। दरअसल, एक महीने पहले हाईकोर्ट ने पंजाब सरकार को निर्देश दिए थे कि राज्य के सभी कर्मचारियों और पेंशनरों को वही DA दिया जाए, जो IAS, IPS और न्यायिक अधिकारियों को मिल रहा है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार पंजाब में करीब 3.5 लाख नियमित कर्मचारी और

4 लाख से अधिक पेंशनर हैं, जिन्हें इस फैसले का लाभ मिलेगा। जानकारी के मुताबिक राज्य में IAS और IPS अधिकारियों को फिलहाल 58 प्रतिशत महंगाई भत्ता दिया जा रहा था, जबकि अन्य सरकारी कर्मचारियों और पेंशनरों को केवल 42 प्रतिशत DA मिल रहा था। इस असमानता को लेकर कर्मचारियों में लंबे समय से नाराजगी थी और विभिन्न कर्मचारी संगठन लगातार समान DA की मांग कर रहे थे। इस मामले में करीब 200 कार्याकर्ता और सेवानिवृत्त कर्मचारियों ने हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। कर्मचारियों की ओर से पेश अधिवक्ता रशपिंदर सिंह ने बताया कि पंजाब सरकार का नियम केंद्र सरकार की तर्ज पर कर्मचारियों को समय—समय पर DA जारी करने का था।

वैदिक मत में अक्ष और चक्र का आधिभौतिक संबंध

प्राचीन भारतीय मनीषा में चक्र केवल काष्ठ या लोह का खंड नहीं है, अपितु वह समष्टि और व्यष्टि के संतुलन का मूलाधार है। महर्षि दीर्घतमा के कालचक्रसिद्धान्त से आगे बढ़ते हुए यदि हम यंत्र की संरचना को देखें, तो ऋग्वेद में अक्षऔर नाभि अर्थात हबके वैज्ञानिक अंतर्संबंधों का सूक्ष्म विवेचन प्राप्त होता है—

सत्रा च ज्ञातमन्तरां च चक्रं हस्तच्युती जनयन्त प्रशस्तम् ।
ऋग्वेद 10/93/14

यह सूक्त स्पष्ट करता है कि हस्त संचालन और पाद संचालन से जनित जो यांत्रिक बल है, वही चक्र को अक्ष पर स्थापित कर गति प्रदान करता है। आधुनिक द्विचक्रिका अर्थात साइकिल का संपूर्ण तंत्र इसी अक्षकीलक सिद्धांतपर गतिमान है। जब मनुष्य पेडल पर पादप्रहार करता है, तब बल का स्थानान्तरण अक्ष के माध्यम से चक्र की परिधि तक होता है, जो भौतिकी के बलआघूर्णक नियम का साक्षात प्रतिरूप है। आचार्य चाणक्य ने कौटलीय अर्थशास्त्रके दुर्गनिवेशऔर संनिधातृकर्मअध्यायों में परिवहन के साधनों, उनके चक्रों की चौड़ाई तथा पथ के निर्माण के मध्य एक निश्चित गणितीय अनुपात का निर्धारण किया है।कौटिल्य के अनुसारराष्ट्र की प्रगति इस बात पर निर्भर करती है कि उसके परिवहन के साधन जनसामान्य के लिए कितने सुलभ और पर्यावरण के प्रति कितने अनुकूल हैं? अर्थशास्त्र में वर्णित द्विचक्ररथपथ और पादपथकी अवधारणा यह सिद्ध करती है कि प्राचीन काल में भी बिना ईंधन के चलने वाले, केवल मानवीय और पशुशक्ति पर आधारित वाहनों के लिए पृथक मार्ग की व्यवस्था थी। आधुनिक नगरीय नियोजन में साइकिल ट्रैक का निर्माण इसी प्राचीन अवधारणा का पुनरुद्धार है। धारानगरी के राजा भोज प्रणीत युक्तिकल्पतरुग्रंथ में केवल नौकानिर्माण का ही नहीं, अपितु भूतल पर चलने वाले विभिन्न यानों के निर्माण का भी सांगोपांग वर्णन है। इस ग्रंथ में लघुयानकी संकल्पना की गई है। भोजराज के अनुसारजो यान भार में न्यूनतम और गति में तीव्र होते हैं, वे मानवशरीर की ऊर्जा के ह्रास को रोकते हैं। द्विचक्रिका के निर्माण में आज जिस ऐल्यूमिनियम मिश्रधातुका कार्बन फाइबरका प्रयोग किया जा रहा है, उसका बीज सिद्धांत युक्तिकल्पतरु के धातुलाघवऔर तनुत्वका सिद्धांतमें अन्तर्निहित है, जहां यंत्र के भार को कम करके उसकी कार्यक्षमता को दुगुना करने का निर्देश है। श्रीमद्भगवद्गीता में योगेश्वर श्रीकृष्ण के द्वारा किये गए उद्घोष—कर्मण्येवाहिाकारस्ते मा फलेषु कदाचन।” सिद्धांत पर विचार करने से

ऐसा प्रतीत होता है कि आधुनिक स्वचालित वाहन मनुष्य को प्रमादी और अकर्मण्य बना रहे हैं। इसके विपरीत, द्विचक्रिका (साइकिल) का संचालन एक शारीरिक यज्ञहै। यहां मनुष्य स्वयं ऊर्जा का स्रोत है। वह परनिर्भर नहीं है।यह यंत्र अन्नऊर्जा को सीधे यांत्रिक ऊर्जा में परिवर्तित करता है, जिससे प्रकृतरथ संतुलन बना रहता है।साइकिल चलाने के लिए संतुलन अनिवार्य शर्त है। जैसे ही ध्यान विचलित होता है, पतन संभावी है। यही जीवन का भी सत्य है— योगः कर्मसु कौशलम्। जीवनरूपी द्विचक्रिका को भी विवेक और सन्तुलन के पेडल से ही चलाया जा सकता है।इस प्रकार यह स्पष्ट है कि यूरोपीय वैज्ञानिकों ने जिस साइकिल को 19वीं शताब्दी में मूर्तरूप दिया, उसके सैद्धान्तिक और व्यावहारिक नियम भारत के यंत्र शास्त्रों में सदियों पूर्व स्थापित हो चुके थे।विश्व साइकिल दिवस केवल एक उत्सव मात्र नहीं है, बल्कि यह पश्चिम के भोगवादी, ईर्ष्यानभक्षी और प्रकृतिविनाशक प्रतिमानों के विरुद्ध भारत के श्रमप्रधान, प्रकृतिपोषक और स्वावलंबी प्रतिमान की वैश्विक विजय का उद्घोष है। चक्र घूमता रहेगा, गति चलती रहेगी, परंतु जब तक यह गति मानवीय श्रम और प्रकृति के सामंजस्य से अनुप्राणित रहेगी, तब तक यह सृष्टि सुरक्षित रहेगी। उल्लेखनीय है कि प्राचीन भारतीय चिकित्सा विज्ञान में शारीरिक गतिशीलता को केवल रोगनिवारण का साधन नहीं, अपितु दीर्घायुष्म का मूल मंत्र माना गया है। आचार्य सुश्रुत ने सुश्रुत संहिताके चिकित्सास्थान में “चङ्क्रमण” नामक एक अत्यंत महत्वपूर्ण शब्द का प्रयोग किया है— चङ्क्रमणं नातिश्रमकरं प्राणान्निवर्धनं स्मृतम्। इन्द्रियप्रसादनं बल्यं सुखं चानिलनाशनम्।। —सुश्रुत संहिता, चिकित्सा स्थान

अर्थात—ऐसा शारीरिक संचलन या व्यायाम जो शरीर को अत्यधिक थकाए बिना (नातिश्रमकरम्) जठराग्नि और प्राणवायु को प्रदीप्त करता है, इन्द्रियों को प्रसन्न रखता है और शरीर में वायु दोष का शमन करता है, वह श्रेष्ठ है।आधुनिक चिकित्सा विज्ञान भी इसकी पुष्टि करता है कि साइकिल चलाना एक लोइम्पैक्ट एरोबिक व्यायामहै। यह दौड़ने की भांति घुटनों और संधियोंपर अतिरिक्त दबाव या आघातनहीं डालता, फिर भी सुश्रुत के कथनानुसार प्राणाग्निवर्धनम् अर्थात चयापचय और हृदय श्वसन सहनशक्ति(मेटाबोलिज्म) औरकार्डियोरैसपाइरेटरी एंड्यूरेंस को बढ़ाना) का कार्य पूर्ण शुद्धता से करता है।वायु और शारीरिक बल का यांत्रिक संतुलनमहाराज भोज ने समराड्गणसूत्रधारके 31वें अध्याय —यन्त्राध्याय में यंत्रों के वर्गीकरण में स्वयंवाहकऔर सक्

प्रेरित यंत्रों की चर्चा की है। यहां वे एक अत्यंत गुप्त और वैज्ञानिक सूत्र का उद्घाटन करते हैं, जो आधुनिक साइकिल के संतुलनविज्ञान को परिभाषित करता है— मरुतः सङ्ग्रहो यत्र शरीरेण च सन्तुलम्। तत्र गतिर्विचित्रा स्याद् यन्त्रं भूमौ प्रधावति।। — समराड्गणसूत्रधार 31/42

इस सूत्र का अर्थ यह है कि जब यंत्र का निर्माण इस प्रकार किया जाए कि वायु के प्रतिरोध का संग्रह (प्रबंधन) और मानवशरीर का गुरुत्वकेंद्र एक रेखा में संतुलित (शरीरेण च सन्तुलम्) हो जाएं, तब वह यंत्र भूमि पर विचित्र (अद्भुत) गति से दौड़ता है।साइकिल चलाते समय भौतिकी का यही नियम कार्य करता है। दो पहियों पर खड़े किसी वाहन का बिना गिरे गतिमान रहना इस बात पर निर्भर करता है कि चालक अपने शरीर के भार और वायु के वेग को किस प्रकार संतुलित करता है। भोजराज का यह श्लोक सिद्ध करता है कि भारत की यान्त्रिक चेतना केवल कल्पना पर नहीं, अपितु कठोर भौतिक और गतिकीय नियमों पर आधारित थी। आचार्य कौटिल्य ने कौटलीय अर्थशास्त्रके अध्येक्षप्रचार खंड में राज्य के कोष की रक्षा और नागरिकों की आत्मनिर्भरता के लिए मितव्ययिताका सिद्धांत प्रतिपादित किया है। उनका मानना था कि राष्ट्र की ऊर्जा और धन का व्यय अनुत्पादक या विनाशकारी साधनों में न्यूनतम होना चाहिए।कौटिल्य के अर्थशास्त्र में कहा गया है— कोशमूलो दण्डः। अर्थात— राज्य की शक्ति का मूल उसका कोष है। आज भारत जैसे विकासशील देश अपने बजट का एक बहुत बड़ा भाग कच्चे तेल के आयात में व्यय करते हैं। यदि नगरीय क्षेत्रों में 5 से 10 किलोमीटर की लघु यात्राओं के लिए द्विचक्रिका को प्राथमिक साधन बनाया जाए, तो यह देश की आर्थिक संप्रभुता और नागरिकों के व्यक्तिगत अर्थतंत्र को सुदृढ़ करने का सबसे बड़ा कौटलीय साधनसिद्ध होगा। यह सत्य है कि सभ्यता की अंधी दौड़ में हमने जिसे प्रगतिमान लिया था, वह वास्तव में प्रकृति और मानवता के विनाश का मार्ग थी। चक्र मानव इतिहास का महानतम आविष्कार था, परंतु जब हमने उस चक्र को जीवाश्मों के रक्त (पेट्रोलियम) से सींचना शुरू किया, तो वह कालचक्रहमारे ही विनाश का कारण बनने लगा। विश्व साइकिल दिवस के इस पावन प्रसंग पर, प्राचीन भारतीय ग्रंथों का यह संदेश वैश्विक मानवता के लिए एक संजीवनी है। साइकिल केवल अतीत की स्मृति या निर्धनों का वाहन नहीं है, अपितु यह 21वीं और 22वीं शताब्दी के उन्नत, स्वस्थ, स्वावलम्बी और प्रदूषणमुक्त

विश्व का भविष्ययानहै।शुक्रनीतिऔर प्राचीन शिल्पशास्त्र में भी मानवचालित यानों के निर्माण की नियमावली निध्ारित की गई है।महर्षि शुक्र अपनी नीति में लिखते हैं— न किञ्चित् कुरुते यन्त्रं बिना युक्तिं च मानवः। शरीरं प्रथमं यन्त्रं तस्याधीनानि सर्वशः।। —शुक्रनीति 4/7

यह श्लोक यान्त्रिकी का सर्वोच्च सिद्धांत प्रस्तुत करता है। संसार का कोई भी यंत्र मानवीय युक्ति और बुद्धि के बिना कार्य नहीं कर सकता, और मनुष्य का अपना शरीर ही प्रथम यंत्रहै। अतः वही बाह्य यन्त्र सर्वश्रेष्ठ है जो मानवशरीर रूपी प्राकृतिक यंत्र के साथ पूर्णतः एकाकारहो जाए।आधुनिक मोटरचालित वाहन मानवशरीर को निष्क्रिय कर देते हैं, जिससे यह प्रथम यंत्ररुग्ण हो जाता है। इसके विपरीत, द्विचक्रिका (साइकिल) एक ऐसा अनूठा यंत्र है जो मानवशरीर की ऊर्जा से ही अनुप्राणित होता है। यह मनुष्य और यंत्र के बीच द्वैत को समाप्त कर अद्वैत की स्थापना करता है— यहां चालक ही यंत्र का इंजन है और यंत्र ही चालक के पैरों का विस्तार है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में, जहां सम्पूर्ण विश्व जलवायु परिवर्तन और नेटजीरो उत्सर्जन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए छटपटा रहा है, वहां कौटिल्य का मितव्ययिताऔर प्रकृतिपोषकसिद्धांत ही एकमात्र मार्ग दिखाता है।यदि हम वैश्विक कार्बन क्रेडिट बाजार के दृष्टिकोण से देखें, तो साइकिल का उपयोग केवल व्यक्तिगत धन की बचत नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र के लिए प्रत्यक्ष हरित पूंजीका निर्माण है।कौटिल्य के अनुसारवही राज्य आर्थिक रूप से संप्रभु है जो अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए बाहरी राष्ट्रों पर निर्भर नहीं है। शहरी क्षेत्रों में साइकिल इन्फ्रास्ट्रक्चर का निर्माण करना, देश के विदेशी मुद्रा भंडार को कच्चे तेल के आयात के भारी दबाव से मुक्त करने का सबसे अचूक और व्यावहारिक कौटलीय साधन है।स्पष्ट है कि विकास की अंधी और अमर्यादित दौड़ में मानवता ने जिस गतिको अपनी सबसे बड़ी उपलब्धि मान लिया था, वही गति आज उसके विनाश का मरुस्थल बन चुकी है। उद्योगों और इंजनों से निकलने वाला धुआं हमारे वेदों के उस पावन उद्घोष को चुनौती दे रहा है, जिसमें कहा गया है कि भूमि मेरी माता है और मैं इस पृथ्वी का पुत्र हूँ— माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः। विश्व साइकिल दिवस केवल कैलेंडर की एक तिथि या सांकेतिक उत्सव नहीं है।



ओडिशा के नए राज्यपाल ब्रज मोहन राम के कथित बयान पर बीजद और कांग्रेस ने जताई आपजि

१७/१० (संवाददाता): ओडिशा की विपक्षी पार्टी बीजू जनता दल (बीजद) ने नवनियुक्त राज्यपाल ब्रज मोहन राम के इस कथित बयान पर बुधवार को निराशा जताई कि पद संभालने के बाद वह ‘भारतीय जनता पार्टी’ (भाजपा) को मजबूत करने के लिए काम करेंगे।

एक और विपक्षी पार्टी, कांग्रेस ने आरोप लगाया कि इससे भाजपा का असली चेहरा सामने आ गया है और मांग की कि राम को वापस बुलाया जाए। बीजद ने ‘पीटीआई वीडियो’ से प्रसारित एक वीडियो जारी किया, जिसमें राम राज्यपाल का पद संभालने के बाद अपनी आगे की कार्ययोजना के बारे में बात करते



हुए नजर आ रहे हैं।

बीजद ने एक बयान में कहा, “पीटीआई के वीडियो में उनकी बातें सुनकर हमें हैरानी हुई, जिसमें वह फिर से कहते हैं कि वह भाजपा को मजबूत करने के लिए काम करेंगे। हम इस टिप्पणी की निंदा करते हैं

ज्योंकि यह टिप्पणी इस तथ्य को दरकिनार करती है कि राज्यपाल पार्टी की राजनीति से ऊपर होते हैं।” बीजद अध्यक्ष नवीन पटनायक ने उज्ज्मीद जताई कि वे संवैधानिक गरिमा बनाए रखेंगे। ओडिशा विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष ने सोशल मीडिया

पर एक पोस्ट में कहा, “ओडिशा के लोग पार्टी का काम करने के लिए मनोनीत राज्यपाल के उत्साह को देख रहे हैं। उमीद है कि महाप्रभु श्री जगन्नाथ उन्हें ओडिशा के लोगों की सेवा करने का जोश और शक्ति देंगे, जिससे वे संवैधानिक गरिमा बनाए रखते हुए निष्पक्ष रूप से अपने कर्तव्यों का पालन कर सकें।’

’ उन्होंने पोस्ट में राष्ट्रपति भवन और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को टैग किया। इस बीच, ओडिशा प्रदेश कांग्रेस कमेटी (ओपीसीसी) के अध्यक्ष भक्त चरण दास ने ‘एज्स’ पर एक पोस्ट में कहा, “राज्यपाल की संवैधानिक जिम्मेदारी निष्पक्ष रूप से संविधान का पालन करना है, न कि किसी राजनीतिक

पार्टी के चुनावी हितों को आगे बढ़ाना।’ उन्होंने कहा कि संवैधानिक पदों को दलीय राजनीति से ऊपर रहना चाहिए। तृणमूल कांग्रेस की सांसद महुआ मोइत्रा ने एक तंज भरे पोस्ट में कहा, “हेलो ओडिशा – ये आपके नए राज्यपाल हैं। उनका कहना है कि उनका काम ओडिशा में भगवा संगठन (भाजपा) को मजबूत करना है। यह राज्य बेरोजगार वरिष्ठ संघियों के लिए कचरा डालने की जगह बन गया है।’

’ भाजपा नेता और तीन बार सांसद रह चुके राम को सोमवार को ओडिशा का राज्यपाल नियुक्त किया गया। राम के बयान पर ओडिशा भाजपा की तरफ से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है।

बालेश्वर में तीन नदियों ने बढ़ाई मुश्किलें

बालेश्वर १७/१० (संवाददाता): ऊपरी जलग्रहण क्षेत्रों में भारी बारिश के बाद बुधबलंगा नदी खतरे के निशान को पार कर गई और सुवर्णरेखा नदी अपने चेतवनी स्तर से ऊपर पहुंच गई, जिससे बालेश्वर जिले में बाढ़ की स्थिति बिगड़ गई। बुधबलंगा अपने खतरे के निशान 8.13 मीटर से ऊपर 8.50 मीटर पर बह रही है, जिससे निचले इलाकों में बाढ़ का खतरा बढ़ गया है। राजघाट में सुवर्णरेखा चेतवनी स्तर के मुकाबले 10.15 मीटर पर पहुंच गई, जबकि इसका खतरे का निशान 10.36 मीटर है। नदी के उच्च स्तर पर बहने के कारण अधिकारी सतर्क रहे। जलका नदी भी उफान पर है, जिससे जिले में बाढ़ की चिंता बढ़ गई है। तीन नदियों में बढ़ते जल स्तर ने छह ज़लों – बालेश्वर सदर, रेमुना, बस्ता, बलियापाल, जलेश्वर और भोगराई को प्रभावित किया है। नदी के स्तर में वृद्धि का कारण ऊपरी जलग्रहण क्षेत्रों में भारी वर्षा है, जिससे बहाव में वृद्धि हुई है और बाढ़ की स्थिति गंभीर हो गई है। जलका नदी भी उफान पर है, जिससे जिले में बाढ़ की चिंता बढ़ गई है।

का ट्रॉलर जस्त

अधिकारी देविदत्ता मोहंती ने बताया कि जस्त की गई मछलियों की नीलामी तय नियमों के अनुसार की गई। उन्होंने कहा कि इस घटना के संबंध में कानूनी कार्रवाई की जा रही है। ट्रॉलर को मरीन पुलिस स्टेशन में ही रखा गया है।

आरएसपी ने स्वच्छता पखवाड़ा के तहत ‘कबाड़ से जुगाड़’ पहल के अंतर्गत महिला किसानों को सतत जैविक खेती का दिया प्रशिक्षण

राउरकेला १७/१० (संवाददाता): राउरकेला स्टील प्लांट (आरएसपी) के सीएसआर आभार द्वारा परिधि विकास संस्थान में ‘वेस्ट टू वेल्थ’ विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

यह कार्यक्रम लाठीकटा, बिसरा, कुआरमुंडा और नुआगांव राजस्व प्रखंडों के परिधीय गांवों की महिला किसानों के लिए आयोजित किया गया था। तीन दिवसीय कार्यक्रम के समापन समारोह की अध्यक्षता महाप्रबंधक प्रभारी (मानव संसाधन), श्री एस. के. मेहरोत्रा ने की और प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए। इस अवसर पर महाप्रबंधक (सीएसआर), श्री बिभावसु मल्लिक, उप महाप्रबंधक (सीएसआर), श्री राजीव बारा, एनआईटी



राउरकेला के एसोसिएट डीन, प्रोफेसर आरसी प्रधान, एवं सीएसआर और एनआईटी के अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

यह पहल ‘स्वच्छता में सहभागिता, स्वच्छ भारत, विकसित भारत 2026’ अभियान के अंतर्गत ‘कबाड़

आरएसपी में संवेदन-‘लैंगिक संवेदनशीलता एवं पीओएसएच जागरूकता कार्यशाला आयोजित



राउरकेला १७/१० (संवाददाता): राउरकेला इस्पात संयंत्र के लर्निंग एंड डेवलपमेंट केंद्र में लैंगिक संवेदनशीलता एवं POSH (कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न की रोकथाम) पर आधारित जागरूकता कार्यशाला ‘संवेदन’ का आयोजन किया गया। राउरकेला इस्पात संयंत्र में सुरक्षित, समावेशी एवं सौहार्दपूर्ण कार्यस्थल को बढ़ावा देने के निरंतर प्रयासों के तहत मानव संसाधन विभाग द्वारा इस कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में लगभग 55 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला का संचालन

सहायक महाप्रबंधक (मानव संसाधन), सुश्री संगीता मारिया सिंदूर ने किया। उन्होंने लैंगिक संवेदनशीलता एवं POSH जागरूकता के प्रमुख पहलुओं पर विस्तार से जानकारी दी। समापन सत्र का संचालन उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन), श्री रॉबिन कुमार ने किया। उन्होंने प्रतिभागियों के साथ संवाद करते हुए कार्यस्थल पर लैंगिक संवेदनशीलता एवं POSH जागरूकता के महत्व पर अपने विचार साझा किए। इस कार्यशाला का उद्देश्य प्रतिभागियों को लैंगिक संवेदनशीलता के महत्व से अवगत कराना तथा आपसी सम्मान, गरिमा, समानता

और व्यावसायिक आचरण पर आधारित कार्यसंस्कृति को प्रोत्साहित करना था। इस दौरान प्रतिभागियों को कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध एवं निवारण) अधिनियम, 2013 के प्रमुख प्रावधानों की जानकारी दी गई। साथ ही, यौन उत्पीड़न की रोकथाम तथा सुरक्षित एवं सम्मानजनक कार्य वातावरण सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर विशेष जोर दिया गया। इस कार्यक्रम का समन्वय सहायक प्रबंधक (मानव संसाधन), श्री संबित नंदी तथा प्रशासनिक सहयोगी (मानव संसाधन), श्री सुवीर सिंह ने किया।

एनजीटी ने ओडिशा के मुख्य सचिव को जवाब देने का आखिरी मौका दिया

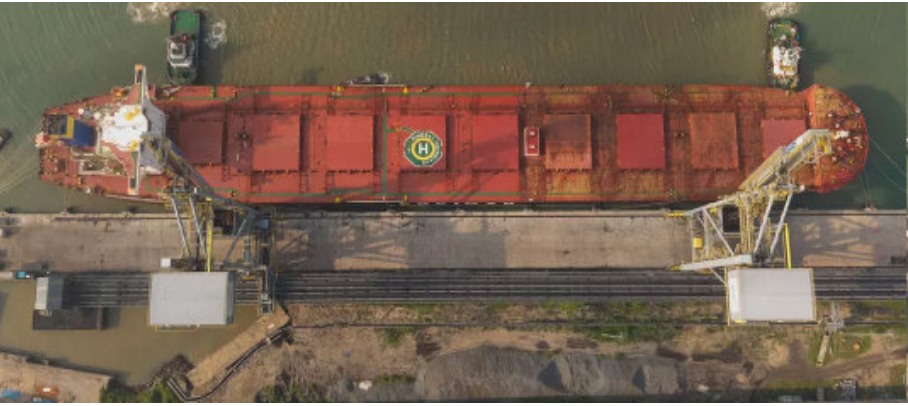
बारीपदा १७/१० (संवाददाता): कोलकाता में नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) की पूर्वी क्षेत्र पीठ ने मंगलवार को सिमिलिलपाल टाइगर रिजर्व के पर्यावरण-संवेदनशील क्षेत्र के भीतर लक्ष्मीपोसी में एक प्रस्तावित होटल या रिसॉर्ट परियोजना से संबंधित एक मामले में अतिरिक्त प्रतिक्रिया दाखिल करने के लिए बारीपदा के मुख्य सचिव और प्रभागीय वन अधिकारी (डीएफओ) को अंतिम मौका दिया। कोर्ट केस लड़ें ट्रिब्यूनल ने पहले राज्य अधिकारियों को अतिरिक्त या संशोधित प्रतिक्रिया दाखिल करने की अनुमति दी थी लेकिन वे निर्धारित समय के भीतर आवश्यक दस्तावेज जमा करने में विफल रहे। एनजीटी ने अंतिम अवसर दिया और चेतवनी दी कि उसके निर्देशों



का पालन करने में विफलता के परिणामस्वरूप संबंधित अधिकारियों को व्यक्तिगत रूप से या वस्तुतः ट्रिब्यूनल के समक्ष उपस्थित होने और गैर-अनुपालन के कारणों को बताने का निर्देश दिया जा सकता है। मामला 93.280 एकड़ में फैले एक प्रस्तावित रिसॉर्ट प्रोजेक्ट

से जुड़ा है। 26 मई को, एनजीटी ने निर्देश दिया था कि साइट पर यथास्थिति बनाए रखी जाए और आईडीसीओ, आईपीआईसीओएल/डीआईपीए और होटल सोनार बांग्ला को जमीन पर कोई भी निर्माण गतिविधि करने से रोक दिया गया था।

अवैध मछली पकड़ने के आरोप में आंध्र प्रदेश



छत्रपुर १७/१० (संवाददाता): आर्यपल्ली मरीन पुलिस और मरीन फिशरीज डिपार्टमेंट की एक संयुक्त टीम ने आंध्र प्रदेश के एक मछली पकड़ने वाले ट्रॉलर को जस्त किया है। आरोप है कि यह

ट्रॉलर ओडिशा की समुद्री सीमा में गैर-कानूनी तरीके से मछली पकड़ रहा था।

टीम ने ट्रॉलर पर मौजूद मछुआरों को भी हिरासत में ले लिया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, ट्रॉलर आर्यपल्ली तट के पास

गैर-कानूनी तरीके से मछली पकड़ रहा था, तभी संयुक्त टीम ने छपा मारकर उसे जस्त कर लिया।

जुरू द्वारा पकड़ी गई भारी मात्रा में मछलियाँ भी जस्त की गईं। छत्रपुर के अतिरिक्त मत्स्य माओवादियों ने गोलीबारी शुरू कर दी, जिसके बाद जवाबी कार्रवाई की गई। इसके बाद हुई गोलीबारी में दो माओवादी मारे गए। मनकू केकेबीएन डिवीजन में एरिया कमेटी मेंबर (एससीएम) के पद पर कार्यरत था। चंदन कंधमाल जिले में सक्रिय प्रतिबंधित संगठन का सदस्य था। एसपी ने कहा कि सुरक्षा बलों ने यह सुनिश्चित करने के लिए तलाशी अभियान तेज कर दिया है कि इलाके में कोई और माओवादी मौजूद न हो। मुठभेड़ के बाद डीजीपी वार्डबी खुरानिया ने कंधमाल एसपी और डीवीएफटीम को सफलता के लिए बधाई दी।

पुलिस ने कंधमाल के जंगल में दो माओवादियों को मार गिराया

कंधमाल १७/१० (संवाददाता): ओडिशा पुलिस ने को कंधमाल जिले में दो माओवादियों को मार गिराया और उनके शिखर से हथियार और गोला-बारूद जस्त किया। मृतकों की पहचान पड़ोसी छत्रीसगढ़ के मूल निवासी मनकू और चंदन के रूप में हुई है, जो प्रतिबंधित सीपीआई-माओवादी संगठन के कालाहांडी-कंधमाल-बौध-नयागढ़ (केकेबीएन) डिवीजन के सदस्य थे। कंधमाल एसपी हरीशा बीसी ने बताया कि दोनों माओवादियों के शव बरामद करने के अलावा सुरक्षा बलों ने

मुठभेड़ स्थल से एक राइफल, रिवाल्वर, कारतूस, वॉकी-टॉकी सेट, बैटरी और अन्य सामान जस्त किया है। एसपी ने कहा कि कंधमाल-कालाहांडी सीमा पर बालीगुडा पुलिस सीमा के भीतर पुरंजीबा रिजर्व वन में माओवादियों की मौजूदगी की सूचना पर कार्रवाई करते हुए पिछले दो दिनों से जिला स्वैच्छिक बल (डीवीएफ) और एसओजी जवानों द्वारा तलाशी अभियान चलाया जा रहा था। उन्होंने कहा, आज दोपहर के समय सुरक्षा बलों और माओवादियों के बीच मुठभेड़ हुई। सुरक्षाकर्मियों को देखते ही

तथा प्राकृतिक बीज उपचार के घोल तैयार करने का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया।

कार्यक्रम में ग्रामीण स्तर पर जैविक कचरे के उचित संग्रहण, पृथक्करण और जैविक प्रसंस्करण के महत्व पर भी जोर दिया गया। महिला किसानों को पर्यावरण-अनुकूल कृषि पद्धतियों को अपनाने तथा रासायनिक कृषि इनपुट पर निर्भरता कम करने के लाभों के बारे में जागरूक किया गया। प्रशिक्षण में इस बात को रेखांकित किया गया कि जैविक कचरे का प्रभावी उपयोग मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने, फसलों की स्वस्थ वृद्धि को बढ़ावा देने, कृषि अपशिष्ट को कम करने तथा सतत कृषि पद्धतियों को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।